ur website www.jaypeebrothers.com, for detailed information on ayurveda books, visit our website www.jaypeebrothers.co



आयुर्वेदीय रसशास्त्र

(राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग के पाठ्यक्रमानुसार)

लेखक

आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा
वैद्य अनुपम श्रीवास्तव
वैद्य नामाधर शर्मा

सहायक

वैद्य मनोज कुमार शर्मा
वैद्य अभिजीत शर्मा

भूमिका लेखक

पद्मश्री, पद्मभूषण वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा

JAYPEE

अनुक्रमणिका

प्रश्न पत्र भाग-क

1. आयुर्वेदीय रसशास्त्र 1-21
2. परिभाषा एवं द्रव्य वर्ग प्रकरण 23-27
3. पुट प्रकरण 29-31
4. यन्त्र वर्णन 33-37
5. मूषा, मुद्रा एवं कोष्ठी प्रकरण 39-42
6. रस (पारद) परिचय 43-73

प्रश्न पत्र भाग-ख

7. महारसादि वर्ग प्रकरण 75-89
8. उपरस प्रकरण 91-100
9. साधारण रस प्रकरण 101-106
10. धातूपधातु एवं अधातु विवरण 107-122
11. रत्नोपरत्न परिचय 123-139
12. सुधावर्ग 141-146
13. सिकता वर्ग 147-150
14. क्षार वर्ग 151-153
15. मिश्रक वर्ग 155-158
16. विष एवं उपविष वर्णन 159-166
17. प्रमुख औषध योगों के द्रव्य, निर्माण विधि एवं औषध प्रयोग का वर्णन 167-177
18. आधुनिक उपकरण 179-191
19. औषधि प्रसाधन अधिनियम एवं रसशाला निर्माण 193-203
20. Pharmacovigilance and ASU and H Drugs in India 205-206

अध्याय
3

पुट प्रकरण

किसी द्रव्य को सम्पुटित कर उपलों की अग्नि में रखकर भस्म करने की विधि पुट कहलाती हैं।

लक्षण :- किसी रस उपरस, महारस, धातु उपधातु एवं रत्नादि को यथाविधि सम्पुटित कर पकाने का नाम पुट देना है।

प्रयोजन :- पुट देने से एवं बार बार किसी द्रव्य को विशेष रसों में घोटकर टिकिया बनाकर पुट देने से उसके दोष दूर होते है तथा अग्नि संयोग से धातु एवं रसादि की धात्वाग्नि में रोगनाशक शक्ति उत्पन्न होती है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि नैनो बायोटेक्नोलोजी का भस्मीकरण अन्यतम उदाहरण है। सामान्य रूप में जिस मेटल का हम प्रयोग घातक मानते हैं। वही भस्म के रूप में सूक्ष्माति सूक्ष्म कणों में परिवर्तित होकर रोगनाशक बन जाते हैं क्योंकि शोधन, पुट एवं भस्म होने से उनके दोष जल जाते हैं। उनका स्वरूप अति सूक्ष्म कण रूप में परिवर्तित होने के कारण शरीर में अधिक से अधिक शोणित होने से रक्त द्वारा शरीर से सूक्ष्म स्रोत तक पहुंच जाते हैं। दूरबीन से देखी जाने वाली अंगुलियों की रेखा में प्रवेश कर जाती है तथा लौह भस्म आदि चुटकी भर लेकर पानी पर डालने से पानी पर तैर जाती है। अत: रसशास्त्र की यह प्राचीन टेक्नोलोजी है। जिस पर 21वीं सदी में विशेष रूप से विचार हो रहा है। अब ऐलोपैथी के चिकित्सकों को पता लगा है कि पुट विधि से रासायनिक परिवर्तन के पश्चात् धातु शरीर के लिए कितनी लाभप्रद है। इसी विधि पर अब औषधियों के निर्माण पर विशेष विचार भी वैज्ञानिक करने लगे हैं।

महापुट :- आधाव्याम गहरा, दो हाथ चोड़ा, गोल गड्ढे को महा पुट कहते है। इसके आधे भाग तक ऊपले भर कर पुट दिया जाने वाला द्रव्य सम्पुट में रखते हैं तथा ऊपर के शेष भाग में ऊपलों से भरकर अग्नि जलाते हैं। स्वयं शीतल होने पर बाहर निकालते हैं। इसका ताम्र, पारद, स्वर्णादि द्रव्यों के भस्म निर्माणार्थ प्रयोग करते हैं।

विशेष :- दोनों हाथ को फैलाने पर होने वाली लम्बाई व्याम कही जाती है।

गजपुट :- एक गज या सवा हाथ गहरे एवं चौड़े गड्ढें में आधे भाग तक उपले भरकर पुट देने वाला पात्र रखते हैं तथा शेष भाग में उपले भरकर अग्नि जलाते हैं। यह पुट सामान्यतया महारस एवं धातुओं को पुट देने में प्रयोग की जाती है। इसमें लगभग 1000 उपले लगते हैं।

JAYPEE BROTHERS

वाराह पुट :- एक अरत्नि (हाथ की कोहनी से छोटी अंगुली तक की लम्बाई) लम्बा चोड़ा गहरा गड्ढा बनावें। इसमें आधे भाग तक उपले भरकर संपुटित पात्र रखकर पुट लगाते हैं। किसी धातु की मूषा को लघु आंच देने के लिए इसका उपयोग होता है। इसे कोडपुट या वारणाख्यपुट भी कहते है।

कुक्कुट पुट :- 2 बालिस्त गहरे एवं चौड़े गड्ढें के आधे भाग में उपले भरकर सम्पुटित पात्र रखकर उपले भरकर पुट लगाते हैं। कहीं-कहीं यह पुट जमीन पर ही उपले तथा पात्र रख कर लगा लेते हैं। इसके द्वारा अभ्रक, ताम्र, रजतादि का भस्म बनाई जाती है।

कपोट पुट :- भूमि पर आठ जंगली उपलों के बीच रसादि सिद्धि के लिए जो पुट लगाई जाती है वह कपोट पुट है। इसे मृदु पुट, लघुपुट भी कहते है। इसका प्रयोग शिलाजीत, हरतालादि के भस्म निर्माण के लिए करते है।

गोमय पुट :- इसे गोबर पुट के नाम से भी जाना जाता है। भूमि में गड्ढा बनाकर या किसी परात आदि बर्तन में गोबर का चूरा भरकर बीच में मूषा रख देते हैं तथा अग्नि जलाते हैं। इस प्रकार मन्द-मन्द अग्नि के पाक किए जाने वाले द्रव्य के लिए यह उपयोगी है।

इसमें गोबर की जगह तुष भर कर भी पुट लगाते हैं इसी कारण कहीं-कहीं उसे तुष पुट भी कहा है। इसको पारद भस्म निर्माणार्थ प्रयोग करते हैं।

कुम्भ पुट :- एक मजबूत मिट्टी के घड़े में आधे भाग तक धान, जौ आदि की तुष भरकर उसके ऊपर मूषा रखकर शेष भाग को तुष से भरकर अग्नि जलाई जाती है। इसे भाण्ड पुष्ट भी कहा जाता है। इसका प्रयोग सोमल, हरतालादि भस्म बनाने के लिए करते है।

बालुका पुट :- द्रव्य युक्त मूषा को गर्म की गई बालू के बीच में रख देना बालुका पुट है। इसके लिए किसी पात्र में आधे भाग तक गर्म बालू भरें तथा मूषा रखकर ऊपर भी बालू गरम गरम भर दें या बालू भरकर मूषा रख दें। यह बालुका पुट प्रकार है।

लवण पुट : मिट्टी के स्थान पर लवण भरने से इसे लवण पुट कहते हैं। इसके द्वारा हरताल, सोमल का मारण करते है।

भूधर पुट :- मूषा के आकार से गड्ढा इतना बड़ा बनावे कि उसके चारों तरफ 2-2 अंगुल जगह खाली रहे। इसमें 2 अंगुल बालु भरकर मूषा रखें। उस मूषा के दोनों तरफ खाली जगह में भी गले तक बालु भर दें। इन पर अग्नि जलावें यह भूधर पुट है। पारद व सोमल का पाक किया जाता है।

लावक पुट :- सामान्यतया मृदु द्रव्यों के पाक के लिए जमीन पर एक बालिस्त ऊंचा, चोड़ा गोबर के चूरे या तुषों का ढेर लगावें। इसके बीच सम्पुट या मूषा रखकर अग्नि जलावें। यह लावक पुट है। मृदु द्रव्यों के भस्म निमार्णार्थ इसका प्रयोग करते है।

यद्यपि इन पुटों में तैयार की जाने वाली भस्में समुचित गुण एवं मानक गुणवाली बनती है तथापि इसमें समय अधिक लगता है इसके लिए अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता होती है अतः शीघ्र भस्म तैयार करने

JAYPEE BROTHERS

के लिए आजकल भट्टियों का उपयोग किया जाता है। जिसमें भस्म शीघ्र तैयार होती हैं। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि विद्युत भट्टियों में तैयार भस्मों के निर्माण में असावधानी होने से भस्म के कण जल जाते है। जिससे उनकी गुणवत्ता कम हो जाती है। तथापि प्रारम्भ कुछ पुटे इन्हीं विद्युत भट्टियों से लगाकर बाद की पुटो को उपलों में भी कुछ निर्माणशाला वाले लगाते हैं। इसके लिए समय लगाकर यह अनुसंधान किये जाने की आवश्यकता है कि कितने तापमान पर धातु कण जलते हैं। उससे कम ताप पर भस्म बनानी चाहिए। सुविधा एवं शीघ तैयार होने की दृष्टि से ही तथा मांग बढ़ने के कारण विद्युत भट्टियों के प्रयोग का ही प्रचलन बढ़ रहा है। बड़ी-बडी फार्मेसियां आज भी उस पद्धति से भस्में बना रही है।

सूर्य पुट : द्रव्यों को भावना देने वाले तरल रूप स्वरस या क्वाथ से भिगोकर या तर करके सूर्य धूप में रखकर सुखाने का नाम सूर्यपुट है।

चन्द्रपुट : रत्नो की पिष्टी बनाते समय भावना द्रव में भिगोकर रात्रि में चन्द्रमा की चांदनी में रखकर घोटते हैं। यही चन्द्रपुटी कहलाती है। मोती, प्रवाल आदि की पिष्टी के साथ चन्द्रपुटी की विशेषता बताई जाती है।

पुट	वर्णन	प्रयोगार्थ द्रव्य	प्रयोग
महापुट	अर्धव्याम हस्तद्वय	उपल (1500)	ताम्र, पारद, स्वर्णादि द्रव्यों के भस्म निर्माणार्थ



JAYPEE BROTHERS

or detailed information on ayurveda books, visit our website **www.jaypeebrothers.com**, for detailed information on ayurveda

आयुर्वेदीय रसशास्त्र

(राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग के पाठ्यक्रमानुसार)

रसशास्त्र की विशेषता :-

- रसशास्त्र इतिहास
- रस रसायन वर्णन, रसशाला, रसमण्डप वर्णन
- रसशास्त्र के रसादि की परिभाषा एवं वर्णन
- यन्त्र वर्णन, मूषा, पुट एवं कोष्ठी
- धातु वर्ग, रत्नवर्ग, सुधा एवं सिक्ता वर्ग
- औषध योग निर्माण विधि एवं उनके द्रव्य।

आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा, एम.डी. (आयुर्वेद), स्व. पं. रामदत्त जी शर्मा के सुपुत्र, मूल निवासी बिसाऊ, झुन्झुनू (राजस्थान) में उत्पन्न अपना प्रारंभिक अध्ययन समाप्त कर जयपुर में आयुर्वेद अध्ययन वैद्य मुरारी मिश्र जी एवं वैद्य रामकृष्ण जी ढण्ढ के सानिध्य में कर्माभ्यास करते हुए आयुर्वेदाचार्य उपाधि प्राप्त की, 1968 से 1978 तक जयपुर एवं हरियाणा के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कराते हुए पदार्थ विज्ञान, शरीर रचना विज्ञान, आयुर्वेद का इतिहास एवं द्रव्यगुण विज्ञान आदि विषयों पर पुस्तकों का लेखन किया। 1980 में पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला से एम.डी. आयुर्वेद की उपाधि प्राप्त कर दिल्ली के मूलचन्द हॉस्पिटल में वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी के पद पर कार्यरत पं. हरिदत्त जी शास्त्री एवं श्री मुकुन्दीलाल जी द्विवेदी के सानिध्य में आयुर्वेद विश्वकोश तैयार किया जिसका एक भाग "पन्चकर्म चिकित्सा विज्ञान" चौखम्बा से प्रकाशित हो चुका है। 1995 में वैद्य शिवकुमार जी मिश्र, पूर्व सलाहकार आयुर्वेद, भारत सरकार के निर्देशन में संकलन कार्य पूर्ण कर मूलचन्द से निवृत्ति लेकर 1995 से मॉडल आई हॉस्पिटल, लाजपत नगर में अधीक्षक आयुर्वेद विभाग के पद पर कार्य कर रहे हैं, साथ ही स्वतंत्र चिकित्सा भी कर रहे हैं।

आपके लेख लगभग 200 अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा अनेक सेमीनारों में शोधपत्र वाचन भी किये हैं। आप दिल्ली के जाने-माने सिद्धहस्त नाड़ी चिकित्सक हैं। आपकी 35 पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी है। केन्द्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान की पाँच पुस्तकोंः वैद्य मनोरमा, अभिनव चिन्तामणि, बृहत योग तरंगिणी, रसमन्जूषा, वैद्यक संग्रह का हिन्दी अनुवाद किया है। विगत 40 वर्षों से आप आयुर्वेद छात्रों में लेखक के रूप में प्रसिद्ध व्यक्तित्व के धनी हैं। आपको अनेक संस्थानों ने अनेक मानद उपाधियांः शताब्दी महर्षि, राजस्थान श्री, आयुर्वेद विश्व गौरव, आयुर्वेद महाप्राण प्रदान की है। वर्तमान में आप राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, दिल्ली के राष्ट्रीय गुरु एवं नि.भा.आयुर्वेद विद्यापीठ के अध्यक्ष हैं। राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ द्वारा आपको लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया है। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, सरिता विहार, दिल्ली द्वारा टीचर्स-डे पर आपको सम्मान-पत्र दिया गया है एवं दिल्ली सरकार द्वारा "**वरिष्ठ नागरिक सम्मान**" से भी सम्मानित किया गया है।

Printed in India

Available at all medical bookstores
or buy online at www.jaypeebrothers.com

JAYPEE BROTHERS
Medical Publishers (P) Ltd.
EMCA House, 23/23-B, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110 002, INDIA
www.jaypeebrothers.com

Join us on facebook.com/JaypeeMedicalPublishers

Shelving Recommendation
AYURVEDA

ISBN 978-93-5696-308-5

9 789356 963085